www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 10, 24-25

Article ID: 219

अमरूद के पुराने एवं अनुत्पादक बागों का जीर्णोद्धार

आकाश शुक्ला*,
रवि शंकर सिंह**

*सहायक प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान, केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान भोपाल

**शोध छात्र, (फल विज्ञान) चन्द्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रोधोगिकी विश्विद्यालय कानपुर उत्तर प्रदेश

अमरूद पोषक तत्वों से भरपूर एवं स्वादिष्ट फल है। देश के प्रायः सभी उष्ण तथा उपोष्ण क्षेत्रों में अमरूद की खेती की जाती है। अमरूद के पौधे लगाने के 3-4 वर्षों के बाद फल देने लगते है और 25-30 वर्षों तक गुणवत्तायुक्त फलत देते रहते हैं।

अमरूद के बाग पुराने होने पर उनसे उत्पादन कम होने के साथ ही वह घने भी हो जाते है। ऐसे में यह वृक्ष किसानों के लिए ज्यादा लाभदायक नहीं रह जाते हैं। पुराने एवं अनुत्पादक वृक्षों को जीर्णोद्धार प्रक्रिया पुनः अधिक उत्पादन के लिए किया जा सकता है और जीर्णोद्धार किये गये इन वृक्षों से पुनः आगामी कई वर्षों तक अधिक एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादन ले सकते हैं।

समान्यतः अमरूद के बाग के पुराने होने पर उत्पादन कम होने के साथ ही किसान पुराने वृक्षों को काटकर नए पौधे लगा देते हैं। जिससे किसानों का खर्च अधिक आता है और प्रारम्भ में 3-4 वर्षों तक बहुत कम फल मिलते हैं। जीर्णोद्धार की क्रिया के माध्यम से इन्ही पुराने एवं अनुत्पादक बागों को पुनः फल देने योग्य बना दिया जाता है। जिससे समय व धन दोनो की बचत होती है।

जीर्णोद्धार की क्रियाएं-

पुराने पेड़ों का निर्धारण व कटाई

अमरूद के बगीचे लगभग 20-25 वर्षों में घने हो जाते हैं। ऐसे पौधों में सूर्य के प्रकाश तथा वायु संचार में भी बाधा पड़ती है। परिणामस्वरूप विभिन्न बीमारियों तथा कीड़ों मकोड़ों का प्रकोप बढ़ जाता है तथा गुणवत्ता एवं उत्पादन में भी कमी हो जाती है।

जीर्णोद्धार करने के लिए पेड़ों की चुनी हुई शाखाओं पर जमीन से 1-1.5 मीटर की ऊँचाई पर चाक या सफेद पेन्ट से निशान लगा देते है। शाखाओं को चुनते समय यह ध्यान रखें की चारों दिशाओं में बाहर की तरफ की शाखा का चुनाव ज्यादा ठीक रहता है। पौधे के बीच में स्थित शाखा, रोगग्रस्त व आड़ी-तिरछी हो तो उसको निकलने के स्थान से ही काट देते। शाखाओं को तेज धार वाली आरी या मशीन चालित आरी से काटते हैं।

कटे भाग पर फफूंदनाशी दवा का लेप लगाना

कटाई के तुरन्त बाद कटे भाग पर फफूंदनाशी दवा बोर्डो मिक्सचर 5:5:20, कॉपर सल्फेट: चूना: पानी) का लेप लगा देते हैं। साथ ही उसमें कीटनाशी दवा क्लोरोपायरीफास 2 मिली लीटर प्रति लीटर की दर से भी मिला सकते हैं ऐसा करने से कीट व बीमारियों से भी बचाव हो जाता है।

कटाई के बाद पौधे की देख-रेख

कटाई के बाद पौधों में थाला बना कर, गुडाई करके मई-जून के महीने में हल्की सिंचाई करनी चाहिए। 20 किग्रा0 सड़ी गोबर की खाद को अच्छी तरह मिलाकर थाला मे डालते है। खाद देने के लिये पौधों के तनों से 50 सेमी0 की दूरी पर गोलाई में 30 से0मी0 चैड़ी तथा 20-25 सेमी0 गहरी नाली बनाकर इस नाली को खाद के मिश्रण से भरकर इसके बाहर की तरफ गोलाई में मेड़ बना दें। सुपर फास्फेट की पूरी मात्रा 1.0 किग्रा0, म्यूरेट आफ पोटाश 0.5 किग्रा0 तथा यूरिया की आधी मात्रा 0.25 किग्रा0 जुलाई से अगस्त महीने में दें।

नये कल्लों का चुनाव एवं अतिरिक्त कल्लों की कटाई

पौधों में 60-70 दिनों के अंदर सुसृप्त कलियों से नये-नये कल्ले निकलने लगते हैं। इन कल्लों को 40-50 सेमी0 तक बढ़ने दिया जाता है। जिन्हें कटाई के 4-5 महीने बाद आवश्यकतानुसार प्रत्येक कल्लों को छोड़कर बाकी सभी कल्लों को सिकेटियर की सहायता से सावधानीपूर्वक काट दें तथा कटे भाग पर पुनः बोर्डो मिक्सचर लगा देते है।

पौधे में अच्छा क्षत्रक का विकास

पौधों में अच्छा क्षत्रक विकसित करने क लिए समय-समय पर चारों दिखाओं में कुछ शाखाओं को छोड़कर आवंछित शाखाओं तथा कल्लों को काटते रहना चाहिए तथा पत्तों पर आने वाले कीड़े तथा बीमारियों का समय से उचित रसायनों के प्रयोग के द्वारा नियंत्रण करते रहें।

खाद एवं नमी संरक्षण

यूरिया की आधी मात्रा 0.25 किग्रा0 को अक्टूबर माह में थाले में डालकर अच्छी तरह मिला दें। अंतिम बरसात के बाद अक्टूबर माह में पौधे के थाले में धान के पुआल या सूखी पत्तियाँ बिछा दें, जिससे लम्बे समय तक नमीं भी संरक्षित रहे सके। पौधों की समय समय पर सिंचाई करना चाहिए।

अंतर फसलीय चक्र

जीर्णोद्वार के पश्चात बगीचों में काफी स्थान खाली रह जाता है, जिसमें तरह-तरह की अंतरशस्य फसल जैसे- दलहनी फसलों में उर्द, मूंग, लोबिया एवं मटर, सब्जियों में कद्दूवर्गीय, टमाटर, मिर्च, मसाले वालों में धनिया, मेथी, सौंफ, फूल वाली फसले गेंदा, गलार्डिया के अतिरिक्त फल वाली फसले फालसा, पपीता, स्ट्राबेरी सफलतापूर्वक उगा सकते है जिससे कम समय में अधिक लाभ के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि की जा सकती है तथा खाली पड़े स्थान को उचित सद्उपयोग हो जाता है।

पुराने बागों के जीर्णोद्वार का लाभ

- कम समय में नये, अधिक उत्पादक बाग तैयार किये जा सकते हैं।
- जीर्णोद्वार करने से अतिरिक्त लकड़ी भी मिलती है जो जलावन के काम आती है।
- जीर्णोद्वार प्रक्रिया द्वारा पुनः फलत में ला कर कम से कम खर्च में गुणवत्तायुक्त पैदावार प्राप्त की जा सकती है।
- पुराने वृक्षों की वांछित कटाई-छंटाई करने से नये तने निकलते हैं, ताकि वे पुनः फल दे सकें।
- पौधों का जीर्णोद्वार कर आने वाले 10-15 वर्षों तक पुनः अच्छे उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

हानियां

- सही समय पर सही ढंग से शाखाओं की कटिंग न होने पर उनमें बहुत तरह की बीमारियां तथा कीड़े लगकर हानि पहुंचाते है।
- शाखाओं को उचित दूरी पर न काटने से पौधों का आकार सही तरह से नही आता है।
- खाद एवं सिंचाई सही समय पर और उचित मात्रा न होने पर पौधों की बढ़वार पर प्रभाव पड़ता है।